ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 185-187**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

अशिक्षित महिलाओं में राजनैतिक चेतना
(पटना नगर के संदर्भ में)

डॉ0 संयुक्ता कुमारी
असिस्टेन्ट प्रोफसर, समाजशास्त्र विभाग,बी.बी.एम.बी.जी. कन्या महाविद्यालय, बिहटा, पटना (बिहार) भारत

Received-19.05.2025, Revised-25.05.2025, Accepted-30.05.2025 E-mail : kumari.sanyuktaji@gmail.com

सारांशः अशिक्षित महिलाओं में राजनैतिक चेतना उत्पन्न हो रही है। इन महिलाओं की सहभागिता मात्र औपचारिक है। औपचारिक सहभागिता का अर्थ होता है कि ये महिलाएँ किसी राजनीतिक दल विशेष की कार्यकर्ता नहीं है किन्तु अवसर विशेष पर अपनी राजनीतिक सूझबूझ का परिचय देती है। ये महिलाएँ मुख्यतः गृहणी हैं। परिवार के अन्दर ये अपने पारिवारिक दायित्व का निर्वाह करती हैं। इनसे यह आशा करना अनुचित होगा कि ये किसी संगठन की पूर्णकालिक सदस्यता स्वीकार करें। ऐसी हालत में ये महिलाएँ राजनीति के प्रति औपचारिक सहमति ही प्रकट कर सकती हैं।

कुंजीभूत शब्द– अशिक्षित महिला, राजनैतिक चेतना, राजनीतिक दल, गृहणी, पारिवारिक दायित्व, औपचारिक, सहभागिता

जनगणना आँकड़ा बताता है कि पटना नगर की जनसंख्या तीव्रगति से बढ़ रही है। यह आव्रजन का परिणाम है। प्रान्त के विभिन्न क्षेत्र तथा भाषा की महिलाएँ अपने परिवार समेत पटना आकर निवास कर रही हैं। ऐसी स्थिति में उन सभी महिलाओं के बीच प्राथमिक समूह का अभाव पाया जाता है। इनके बीच द्वितीय समूह का प्रभाव है। जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इन महिलाओं को विभिन्न द्वितीयक संगठनों का सहयोग मिलता है। इस कारण से पटना नगर का स्वरूप जटिल व विस्तृत होता जा रहा है। यहाँ विभिन्न नगरीय विशेषताएँ उत्पन्न होने लगी है। इस सम्बन्ध में लुईस वर्थ ने स्पष्ट रूप से कहा है कि समान हित के व्यक्ति के मिलन से विभिन्न प्रकार के ऐच्छिक संगठनों का निर्माण होता है। नगरीय समुदाय की विभिन्न आवश्यकतायें तथा उसके अनुरूप विभिन्न ऐच्छिक संस्थायें होती हैं। व्यक्ति अपनी इच्छा तथा आवश्यकताओं के अनुरूप इसमें सहभागिता करता है।[1]

यहाँ पटना के अशिक्षित महिलाओं की राजनीतिक चेतना पर विश्लेषण किया जा रहा है। राजनीतिक चेतना अमूर्त वस्तु है। इसकी जानकारी व्यक्ति के विभिन्न क्रियाकलापों से होती है। पटना जैसे विभिन्न गतिविधियों के नगर में व्यक्ति पुरुष हो अथवा महिला साक्षर हो या निरक्षर, वह राजनीतिक गतिविधि से बिल्कुल अछूत नहीं रह सकता है। संचार साधनों का विकास, विभिन्न गोष्ठी, सभा, सम्मेलन, हड़ताल, धरना आदि का आयोजन अक्षर ज्ञान से दूर महिलाओं में भी राजनैतिक चेतना जगा देता है। इन महिलाओं की राजनीतिक चेतना उनकी राजनीतिक सहभागिता से ही आँकी जा सकती है।

अब यहाँ यह सवाल उत्पन्न होता है कि राजनीतिक सहभागिता क्या है। कलोस्की के अनुसार राजनीतिक सहभागिता का अर्थ होता है वह क्रिया जिससे व्यक्ति शासकों का चुनाव करता है तथा प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से शासन के नीति निर्धारण में अपना योगदान करता है। शासन में सहभागिता का यह तरीका औपचारिक अथवा अनौपचारिक या प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष कुछ भी हो सकता है।[2] रस तथा फिलीप के अनुसार, राजनीतिक व्यवस्था में किसी भी स्तर पर व्यक्ति की भागेदारी को राजनीतिक सहभागिता कहा जाता है।[3]

राजनीतिक सहभागिता का सामान्य अर्थ नागरिक उत्तरदायित्व, राजनीतिक स्वास्थ्य, निजी हित तथा स्वार्थ–पूर्ति का सर्वोतम माध्यम तथा समाज की प्रमुख आवश्यकता मानी गयी है।[4] जनवादी राजनीतिक व्यवस्था में नागरिकों की राजनीतिक सहभागिता व्यवस्था को प्रभावशालीता तथा स्थिरता का द्योतक है।[5] विभिन्न राजनीतिक दल, भारतीय चुनाव प्रणाली ऐच्छिक तथा विभिन्न राजनीतिक संस्थाओं की सदस्यता द्वारा सामाजिक स्तर पर राजनीतिक व्यवस्था को बल प्राप्त होता है।[6] इससे भी पटना की निरक्षर महिलाओं में राजनीतिक चेतना जागृत हाती है।

शुरू में राजनैतिक चेतना का अर्थ काफी सीमित था। पश्चिमी देशों में, राजनीतिक विचार–विमर्श करना किसी को मतदान के लिए प्रोत्साहित करना, उसमें प्रचार सामग्री का वितरण करना, इसके लिए धन संग्रहण आदि का कार्य करना ही राजनीतिक चेतना अथवा सहभागिता का मापदण्ड था।[7] आज यह अवधारणा बदल गयी है। इसका अर्थ विस्तृत हो गया है। मैथ्यु, प्रोन्थो आदि के अनुसार व्यक्ति का कोई व्यवहार यदि राजनीतिक विचारों को प्रत्यक्ष रूप से अभिव्यक्त कर दे तब इसे राजनीतिक सहभागिता कहा जाएगा।[8] इस तरह राजनीति सहभागिता में वे सभी राजनीतिक क्रियाकलाप आ गये हैं जो अभी तक चर्चा से अछूते थे। केहाल्डो ने राजनीतिक सहभागिता की विस्तृत चर्चा करते हुए इसके तीन स्वरूपों की चर्चा की है।

1. **परम्परागत राजनीतिक सहभागिता–** इसमें समस्त परम्परागत बातें, जैसे राजनीतिक दल की सदस्यता, राजनीतिक विचार–विमर्श, चुनाव प्रचार करना, चुनाव लड़ना आदि को रखा गया है।
2. **राजनीतिक विरोध अथवा सहयोग–** विभिन्न राजनीतिक नेताओं का समर्थन करना या विरोध करना अथवा उसके विरोध में वक्तव्य देना आदि।
3. **परम्परागत राजनीतिक सहभागिता–** प्रदर्शन, घटना, जुलूस, दंगा, हड़ताल आदि में भां लेना।[9]

अब यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि व्यक्ति राजनीतिक चेतना प्रदर्शित करने के लिए क्यों राजनीतिक सहभागिता करता है। इसकी चर्चा करते हुए मैथु ने यह निष्कर्ष दिया कि तीन प्रमुख कारणों – मनोवैज्ञानिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक से व्यक्ति राजनीतिक जीवन में भां लेता है।[10] दूसरों पर अपना प्रभुत्व कायम करने की व्यक्ति की सामान्य इच्छा होती है। ऐसा व्यक्ति इस कारण से करता है कि उसे समाज में उच्च स्थान मिले। समाज पर उसका वर्चस्व हो। कुछ लोगों में समूह को नेतृत्व प्रदान करने की इच्छा होती है। यही मनोविज्ञानिक कारण है जिसके प्रभाव में आकर व्यक्ति राजनीतिक सहभागिता करता है।[11]

राजनीतिक सहभागिता का दूसरा कारण आर्थिक होता है। कुछ व्यक्ति विभिन्न आर्थिक क्रियाकलाप में संलग्न होते हैं। व्यापार, मिल–उद्योग–धन्धा, आयात–निर्यात जैसे कार्यों में संलग्न व्यक्ति के पास धन अधिक होता है। वे अधिक से अधिक लाभ चाहते हैं। अपने धन से वे चन्दा तथा अन्य भारी आर्थिक लाभ पहुँचाकर विभिन्न राजनीतिक व्यक्ति को अपने पक्ष में करते हैं। अक्सर सत्ताधारी दल के नेता को वे अपने प्रभाव में लाने का उपक्रम करते हैं। इनका यह सब आर्थिक सहभागिता प्रमुख रूप से आर्थिक कारणों से ही होता है।[12]

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

समाज में विभिन्न संस्कृति साथ–साथ रहती है। समाज में विभिन्न दबाव समूह का भी अस्तित्व होता है। किन्तु सभी दबाव समूह को सत्ता की प्राप्ति नहीं हो पाती है। सत्ता के आकांक्षी कई होते हैं किन्तु सत्ता का अवसर सीमित होता है। कभी–कभी तो यथार्थ कारणों से भी विभिन्न संस्कृतियों को सत्ता में समुचित प्रतिनिधित्व नहीं मिल पाता है। ऐसी स्थिति में उनकी संस्कृति उपेक्षित होने लगती है। तब अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए जागरूक व्यक्ति राजनीतिक सहभागिता करने लगते हैं। असम का बोड़ो आन्दोलन, बिहार का झारखण्ड आन्दोलन इसी तरह की राजनीतिक सहभागिता का परिणाम है। राजनीतिक सहभागिता को सामाजिक, मनोविज्ञानिक, राजनीतिक रूप से स्पष्ट करते हुए डाउसे एवं हूगुस[13] ने बताया– सामाजिक सहभागिता से सम्बन्धित कारकों में शिक्षा, धर्म, लिंग, आयु, प्रजाति निवास के विभिन्न नगरीय ग्रामीण स्थल आदि आते हैं। मनोवैज्ञानि सहभागिता में व्यक्ति के निजी गुण, जैसे– विनम्रता, हीनता, क्रोध, घृणा, रुचि, सहनशीलता, श्रेष्ठता आदि आता है।

अशिक्षित महिलायें भी इससे प्रभावित होती हैं। विभिन्न राजनीतिक सभा आपसी वार्तालाप, आन्दोलन आदि का प्रभाव भी निरक्षर महिलाओं पर पड़ता है। पटना नगर का वातावरण आधुनिक है। यहाँ रह रही महिलाओं पर ग्रामीण परिवेश क तरह बंदिश, रोक आदि नहीं लगाया जाता है। उनके सामाजिक सम्पर्क का दायरा भी विस्तृत होता है। पास–पड़ोस में अच्छे सुलझे विचार के व्यक्ति, पढ़े–लिखे व्यक्ति अथवा किसी राजनीतिक दल का कार्यकर्त्ता आदि भी मिल जाता है। इन सब कारणों से उसमें राजनीतिक चेतना का जागना स्वाभाविक है।

साहित्य सर्वेक्षण– भारतीय संदर्भ में नीरा देसाई (1957), योगेश चन्द्र घोष (1928), इन्दिरा (1955), कला रानी (1991), प्रोमिला कपूर (1974) आदि ने महिलाओं की प्रस्थिति में परिवर्तन का अध्ययन किया है। कुछ द्विानों ने महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता पर भी अध्ययन किये हैं।

अध्ययन का उद्धेश्य– प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्धेश्य हैं :

1. उत्तरदात्रियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. उत्तरदात्रियों के राजनैतिक चेतना पर नगरीकरण के प्रभाव का विश्लेषण करना।

उपकल्पनायें– प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नलिखित उपकल्पनाए निरूपित की गई है :

1. अशिक्षित महिलायें दलगत राजनीति से दूर रहती है।
2. अशिक्षित महिलायें राजनीतिक दलों को चन्दा नहीं देती है।
3. अशिक्षित महिलायें चुनाव प्रचार में भाग नहीं लेती है।
4. अशिक्षित महिलायें राजनीतिक जेल यात्रा से दूर रहती है।

निदर्शन– अध्ययन के निदर्शन का चयन करने के लिये सुविधापूर्ण निदर्शन विधि का प्रयोग किया गया है। निदर्शन में शिक्षित तथा अशिक्षित दोनों प्रकार की महिलाओं को सम्मिलित किया गया है। यहाँ पर यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि जब पटना नगर की अशिक्षित महिलाओं की राजनैतिक चेतना का अध्ययन करना था तो फिर शिक्षित महिलाओं का चयन किया गया? नगरीकरण के प्रभाव की मात्रा को स्पष्ट करने के लिये शिक्षित तथा अशिक्षित दोनों प्रकार की महिलाओं को सम्मिलित किया गया ताकि यह स्पष्ट हो सके कि नगर में शिक्षित महिलाओं की सीमा पर किस–किस अवस्था तक नगरीकरण का प्रभाव पड़ रहा है और अशिक्षित महिलाएँ किस सीमा तक नगरीकरण से प्रभावित है। दोनों का तुलनात्मक अध्ययन के उद्धेश्य से दोनो समूह से तथ्यों का संकलन करना पड़ा। दोनों समूह से 100 महिलाओं का चयन किया गया है जिसमें 50 निरक्षर महिलायें हैं शेष 50 शिक्षित महिलायें हैं। प्रत्येक परिवार से एक ही महिला उत्तदाता का चयन किया गया है।

तथ्य संकलन की प्रविधि– वर्तमान अध्ययन के लिए साक्षात्कार अनुसूची विधि का प्रयोग किया गया है। साक्षात्कार अनुसूची दो भागों में बँटी हुई है। प्रथम भाग में व्यक्तिगत सूचनाओं से सम्बन्धित प्रश्न रखे गये हैं, जबकि अनुसूची के दूसरे भाग में महिलाओं की राजनैतिक चेतना को स्पष्ट करने वाले प्रश्न रखे गये हैं।

तथ्यों का संकलन, वर्गीकरण एवं विश्लेषण – अनुसूची के द्वारा उत्तदात्रियों से तथ्यों का संकलन किया गया तथा उसके बाद उनका वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया गया है।

उपब्धियाँ–

- सर्वाधिक अशिक्षित महिलायें 31 से 40 वर्ष की है तथा सर्वाधिक शिक्षित महिलायें 21 से 30 वर्ष की है।
- सर्वाधिक 45.3 प्रतिशत अशिक्षित महिलाओं का मासिक आय 5000 से 7000 है तथा सर्वाधिक शिक्षित महिलाओं मासिक आय 8000 से 12,000 रूपये है।
- 58 प्रतिशत अशिक्षित तथा 62 प्रतिशत शिक्षित महिलाओं का जन्म स्थान शहरी क्षेत्र है।
- सर्वाधिक उत्तरदात्रियाँ उच्च जाति की है। इनमें 54 प्रतिशत अशिक्षित तथा 60 प्रतिशत शिक्षित महिलाएँ हैं।
- 8.7 प्रतिशत अशिक्षित तथा 4.4 प्रतिशत शिक्षित महिलायें नौकरी करती है। 8 प्रतिशत अशिक्षित तथा 14 प्रतिशत शिक्षित महिलाएँ अविवाहित हैं। 36 प्रतिशत अशिक्षित तथा 56 प्रतिशत शिक्षित महिलाओं का एकाकी परिवार है।

सर्वाधिक 34 प्रतिशत अशिक्षित महिलायें दलगत राजनीति से दूर रहती है जबकि सर्वाधिक 42 प्रतिशत शिक्षित महिलायें भाजपा तथा जदयू के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करती है। 98 प्रतिशत अशिक्षित महिलायें तथा 88 प्रतिशत शिक्षित महिलायें राजनैतिक दल को आर्थिक मदद नहीं देती है। 48 प्रतिशत अशिक्षित महिलाये हमेशा चुनाव में भाग लेती है, जबकि 42 प्रतिशत शिक्षित महिलाये कभी–कभी चुनाव में भां लेती है। 80 प्रतिशत अशिक्षित तथा 74 प्रतिशत शिक्षित महिलायें चुनाव प्रचार में भाग नहीं लेती है।

- 90 प्रतिशत अशिक्षित 94 प्रतिशत शिक्षित महिलाओं ने गत लोक सभा चुनाव में मतदान किया था।
- 82 प्रतिशत अशिक्षित तथा 96 प्रतिशत शिक्षित महिलाओं ने गत विधान सभा चुनाव में मतदान किया था। 90 प्रतिशत अशिक्षित तथा 96 प्रतिशत शिक्षित महिलायें राजनैतिक प्रदर्शन में भां नहीं लेती है। 94 प्रतिशत अशिक्षित तथा 98 प्रतिशत शिक्षित महिलायें राजनैतिक कारणों से जेल यात्रा से दूर रहती है। शतप्रतिशत अशिक्षित तथा 96 प्रतिशत शिक्षित महिलायें चुनाव लड़ने की बात स्वीकार नहीं की है। 82 प्रतिशत अशिक्षित तथा 40 प्रतिशत शिक्षित महिलायें राजनैतिक विचार विमर्श में रूचि नहीं रखती है।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-II, Issues-36, YEAR-April-June. 2025

- 54 प्रतिशत अशिक्षित तथा 40 प्रतिशत शिक्षित महिलायें सिर्फ ईमानदारी को नेता के लिए आवश्यक गुण मानती है।
- 60 प्रतिशत अशिक्षित महिलाएँ तथा 40 प्रतिशत शिक्षित महिलायें देश के शासन प्रणाली में कोई विचार नहीं रखती है।
- 78 प्रतिशत अशिक्षित महिलाओं को जानकारी नहीं है कि देश की न्यायपालिका किस स्थिति में है जबकि 8.7 प्रतिशत महिलायें इसे सफल मानती है, तो 14 प्रतिशत असफल मानती है। शिक्षित महिलाओं में से 2 प्रतिशत पूर्ण सफल, 11.3 प्रतिशत सफल, 52.7 प्रतिशत असफल मानती है तथा 34 प्रतिशत को जानकारी नहीं है।

भारतीय निर्वाचन प्रणाली के बारे में पूछे जाने पर अशिक्षित महिलाओं में से 14 प्रतिशत, 26 प्रतिशत, 46 प्रतिशत तथा 14 प्रतिशत, शिक्षित महिलाओं में से 26 प्रतिशत, 30 प्रतिशत 20 प्रतिशत तथा 24 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने भारतीय निर्वाचन प्रणाली के अवगुण के रूप में क्रमशः धन का दुरूपयोग, जातपात का प्रचार, सत्ता का दुरूपयोग जनता की अशन्ता को दोषी मानती है।

आज राजनीति में विभिन्न दबाव समूह उभर आये हैं। प्रत्येक राजनीतिक दल अथवा प्रत्याशी किसी न किसी दबाव समूह से प्रभावित रहता है। ये दबाव समूह सदैव अपने लक्ष्य पूर्ति के लिए क्रियाशील रहती है। यहाँ पटना की निरक्षर महिलायें दबाव समूह के विभिन्न आधार प्रस्तुत करती है। सबसे अधिक समान व्यवसाय को 30 प्रतिशत महिलाओं ने दबाव समूह का कारक माना है। दूसरे स्थान पर समान आर्थिक स्तर को रखा गया है। इसे 28 प्रतिशत महिला स्वीकार करती हैं। राजनीतिक एकता को 26 प्रतिशत तथा जाति को 16प्रतिशत महिला स्वीकार करती है, फिर भी 58 प्रतिशत महिला दबाव समूह में अर्थ की भूमिका को ही प्राथमिकता देती है।

जाति पंचायत में सहभागिता के बारे में पूछे जाने पर 50 प्रतिशत अशिक्षित महिलायें खुलकर जाति पंचायत में शरीक होती है किन्तु 20 प्रतिशत अशिक्षित महिलायें इसमें भाग नहीं होती है। 20 प्रतिशत अशिक्षित महिलाये तो जाति पंचायत के अस्तित्व को ही नकार देती है। 10 प्रतिशत अशिक्षित महिलाओं पर उपरोक्त कथन लागू नहीं होता है।

जाति पंचायत का सामाजिक महत्व के बारे में पूछे जाने पर 38 प्रतिशत अशिक्षित महिलाएँ जाति पंचायत के महत्व को इन्कार करती है। 36 प्रतिशत अशिक्षित महिलाएँ इस सम्बन्ध में स्पष्ट रूप से राय व्यक्त नहीं कर पाती है। 26 प्रतिशत अशिक्षित महिलाएँ ही जाति पंचायत की सामाजिक भूमिका को स्वीकार करती हैं।

जाति संगठन का आर्थिक–राजनीतिक महत्व के बारे में पूछे जाने पर 18 प्रतिशत अशिक्षित महिलाएँ जाति संगठन के आर्थिक–राजनीतिक महत्व को स्वीकार करती है, 40 प्रतिशत स्वीकार नहीं करती तथा 42 प्रतिशत महिला जाति संगठन के अस्तित्व से ही अनभिज्ञ है।

व्यवसायिक संगठन के सदस्य के बारे में पूछे जाने पर 72 प्रतिशत ने कहा कि वो व्यवसायिक संगठन के सदस्य नहीं है। 28 प्रतिशत को इस प्रकार के संगठन तक की जानकारी नहीं है।

अशिक्षित महिलाओं से यह पूछा गया कि आप पेशे से संबंधित हड़ताल अथवा प्रदर्शन में भाग लेती है। 28 प्रतिशत महिलाएँ पेशे से सम्बन्धित हड़ताल या प्रदर्शन में भाग लेती हैं। 48 प्रतिशत महिलायें किसी भी प्रकार के प्रदर्शन अथवा हड़ताल में भाग नहीं लेती है। और 24 प्रतिशत महिलायें इस सम्बन्ध में निरूत्तर रही।

समाजसेवी संगठनों के सदस्यता के बारे में पूछे जाने पर 2 प्रतिशत अशिक्षित महिलाओं ने कहा कि वह समाज सेवी संगठन की सदस्य है, 92 प्रतिशत सदस्य नहीं हैं और 6 प्रतिशत महिलाएँ इस सम्बन्ध में निरूतर रही।

सांस्कृतिक संगठनों के सदस्यता के बारे में पूछे जाने पर 24 प्रतिशत ने हाँ कहा, 62 प्रतिशत ने नहीं कहा तथा 16 प्रतिशत निरूत्तर रही।

शैक्षणिक संगठन में सदस्यता के बारे में पूछे जाने पर 94 प्रतिशत ने नकारात्मक उत्तर दिया तथा 6 प्रतिशत निरूत्तर रही।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि अशिक्षित महिलाओं पर भी नगरीकरण का प्रभाव पड़ रहा है, क्योंकि नगरीय क्षेत्र में निवास करने के कारण वे आधुनिकता के तथा नवीनता के सम्पर्क में आती जा रही है जिससे उनमें राजनैतिक चेतना जागृत हो रही है। वे अपने वोट के महत्व को समझने लगी है तथा मतदान के दौरान सक्रिय रहती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वर्थ लुईस : अरर्बनिज्म एज ए वे ऑफ लाइफ, अमरीकन जनरल ऑफ सोसियोलॉजी जुलाई, 1938, अंक – 44, पृ. 124.
2. मैक क्लोस्की, एच., पॉलिटिकल पार्टीशिपेशन इन्टरनेशनल एनसाइक्लोपेडिया ऑफ दी सोसल साइंसेज, 1968, पृ. 552–65 कोलियर मैकमिलन
3. सी. एस., एम. टलवाफ फिलीप, इन इन्ट्रोडक्शन टू पॉलिटिकल सोसियालॉजी, लन्दन, 1971, पृ. 14.
4. डाउसे, आर. एफ. एंड हुगूस जे. ए., पॉलिटिकल सोसियोलॉजी, जॉन बिली एंड सन्स लन्दन, 1972, पृ. 289.
5. भाम्मरी, ई.पी., द अरबन वोटर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, 19773, पृ. 63–64.
6. हक ई., एजूकेशनल स्टडी एंड पॉलिटीसाइजेशन, अप्रकाशित शोध ग्रंथ, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली, 1975.
7. मिलवर्थ, एल. पॉलिटिकल पार्टीसिपेशन, मेनाली एंड शिकागो, 1965.
8. मैथ्यू, डी.आर. एवं प्रोथे, जे.डब्लू., निग्रोइस एंड दी न्यू साउदर्न पॉलिटिक्स, हरकोर्ट ब्रास एंड वर्ल्ड इन्क, न्यूयार्क, 1966, पृ. 36.
9. केहडाल्डो, ई. ई., दी अरबन पुअर कम्यूनिटी एकशन इन वफैली, मध्य–पश्चिम राजनीतिक विज्ञान समिति में प्रस्तुत शोध पत्र से साभार, शिकागो, 2 मई, 1968.
10. लाने, आर., पॉलिटिकल लाइफ फ्री प्रेस न्यूर्याक, 1959, पृ. 101–111.
11. लीन फिल्ड, पल., इकनॉमिक इन्टरेस्ट एंड पॉलिटिक्ल इन्वाल्वमेंट पब्लिक ओपिनियन, त्रेमासिक, अंक 28, 1964, 101–104.
12. लाने, आर., वही, पृ. 101–111.
13. डाउसे, आर. एफ. एंड हूगुस, जे. ए., पॉलिटिकल सोसियोलॉजी, जान बिली एंड सन्स, लन्दन, 1962, पृ0 289.

*****